दादा भगवान परिवार का

अप्रैल २०१९

शुल्कप्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

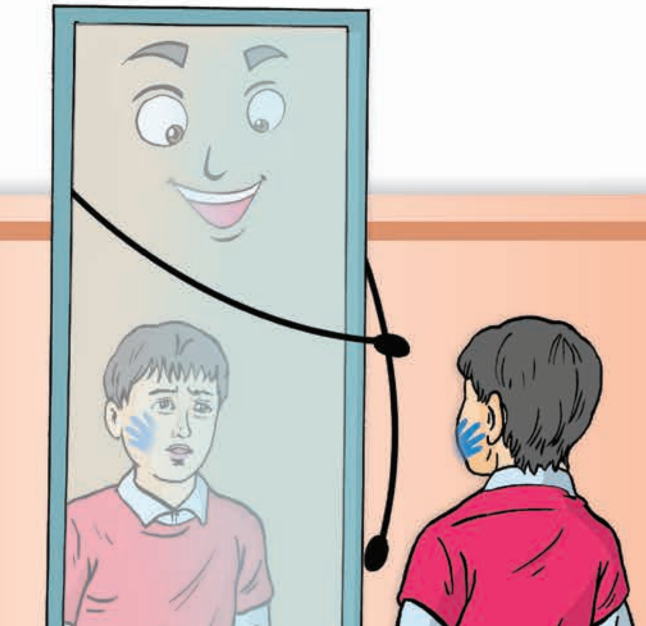

अपना आईना

संपादकीय

बालमित्रों,

भगवान की कृपा से यदि कभी हमें मन में हुआ कि "मुझे सुधरना है," तो हमें अपनी एक-एक भूल में से निकलना पड़ेगा।

लेकिन प्रश्न यह है कि अपनी भूलें ढूँढी कैसे जाए? यह क्या आसान है?

हाँ, आसान है!

इस अंक में परम पूज्य दादाश्री ने उसका सब से आसान रास्ता दिखाया है। तो यह अंक ज़रूर पढ़ना और अपनी हर एक भूल में से निकलकर शुद्ध हो जाओ यही भावना...

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ७ अंक: १
अखंड क्रमांक: ७३
अप्रैल २०१९

....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' केनाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : अपने दोष किस तरह से जल्दी दिखेंगे?

पूज्यश्री : औरों के दोष दिखते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ दिखते हैं।

पूज्यश्री : यदि किसी के दोष दिखाई दें, तो वह अपने में कहाँ-कहाँ हैं, उसे चेक करना। यदि कोई झूठ बोल रहा है, वह हमें अच्छा नहीं लगता तो चेक करना है कि हमने अभी तक कहाँ-कहाँ झूठ बोला है। यानी अपने दोष देखने के लिए यह बेस्ट अवसर है। फिर ऐसा देखते ही दिखेगा कि वह बेचारा तो एक बार बोला होगा, मैंने तो दस बार बोला है। अच्छा है, चलो, हम अपना साफ कर देंगे। यानी अपने दोष देखने की यह नई तरकीब हमें मिलती है। उसके प्रतिक्रमण करने हैं। भविष्य में कभी नहीं बोलेंगे ऐसा तय करना है।

किसी के लिए ऐसा लगे कि वह बात-बात में मनमानी करता है। तो हमने कभी मनमानी की है? देखेंगे। किसी के लिए ऐसा लगे कि वह तो कितना मोही व्यक्ति है। तो याद करेंगे, हमने कभी मोह किए हैं? कोई कहे कि यह व्यक्ति तो स्वभाव से ही बहुत कठोर है। बहुत गुस्से वाला है। तो हमने कभी गुस्सा किया है?

दूसरों के जितने दोष दिखते हैं न, उतने दोष हमारे अंदर होते ही हैं। चाहे दो प्रतिशत ही हों, बारह प्रतिशत हों या अस्सी प्रतिशत हों। लेकिन होते ही हैं। क्योंकि नियम क्या है, यदि खुद दोष वाला होता है तभी उसे ओरों के दोष दिखते हैं। यदि खुद निर्दोष हो गया है तो उसे निर्दोष ही दिखेंगे।

यह तो हम सामने वाले के दोष देखते रहते हैं और उसी प्रकार के ढ़ेर सारे दोष हमारे अंदर पड़े हुए हैं। उन्हें साफ करना रह जाता है। जब अपने दोष देखना शुरू करेंगे उसके बाद अपने दोष देखने से फुर्सत ही नहीं मिलेगी। फिर किसी के दोष देखने का टाइम ही नहीं होगा। अतः यह बड़ा काम बाकी रह जाता है।

01

हमारे ही दोष जगत् को दोषित दिखाते हैं। जैसे-जैसे हमारे दोष खत्म होते जाएँगे वैसे-वैसे जगत् निर्दोष दिखेगा।

03

जो हमें अच्छा नहीं लगता, वैसा व्यवहार औरों के साथ नहीं करना, उसे मानवता कहते हैं।

यह तो नई ही बात है !

आईना कितना कीमती है! मैं कैसा दिखता हूँ उसमें मैं देख सकता हूँ। यदि हमारे बाल पर कहीं कचरा है या बाल की चोटी ऊँची रह गई है तो आईने में दिख जाता है। फिर हम पानी लगाकर उसे बिठा देते हैं। इस तरह ठीक ठाक होने के लिए आईना उपकारी है। आईना हमारी भूलें दिखाकर हमें भूल रहित बनाता है। उसी प्रकार लोग हमारा आईना है।

02

यदि सामने वाले के दोष दिखते हैं तो प्रार्थना करेंगे, "हे शुद्धात्मा भगवान, भाई को खुद के दोष दिखें, उसमें से वह छूटे ऐसी कृपा कीजिए।"

04

गहन प्रश्न

"कैसी हो आन्टी? मैं हीना बोल रही हूँ। सानवी है?" हीना ने पूछा।

"हीना बेटा, तेरी मीठी आवाज़ तो मैं पहचान ही जाती हूँ न, तुझे पहचान देने की ज़रूरत नहीं है! फोन चालू रख। मैं सानवी को बुलाती हूँ," कहकर, रीटा बहन ने सानवी के रुम में झाँका।

सारे रुम में कपड़े फैले हुए थे। सानवी आइने के सामने दो ड्रेस लेकर खड़ी थी,

"यह... या फिर... यह," आईने में देखकर, वह खुद ही अपने साथ बातें कर रही थी।

"सानवी, हीना का फोन है," रीटा बहन ने धीरे से कहा।

"ओफो मम्मी! अभी टाइम नहीं है," सानवी ने अकुलाकर कहा। "Please tell her that I will call back."

"सानवी, पता है न, कि वह तीसरी बार फोन कर रही है।" रीटा बहन ने याद दिलाया।

"यस, यस, यस... आई नो, मम्मी! मैं उसे फोन कर लूँगी।" मम्मी के सामने देखे बिना ही सानवी ने जवाब दिया। "तुम्हें पता है न, कि आज रोशनी की बर्थ डे पार्टी है और I Want to look my best." वह बात तो मम्मी के साथ कर रही थी लेकिन उसकी नज़र आईने के सामने टिकी हुई थी।

सानवी का ध्यान खींचना मुश्किल था। इसलिए रीटा बहन ने उसके साथ ज्यादा आर्ग्यूमेन्ट नहीं की।

करीब पंद्रह ड्रेसिस ट्राय करने के बाद, "फाइनली!" सानवी आईने के सामने देखकर बोली," Now I think I look good."

सारे रास्ते सानवी पार्टी की कल्पनाओं में खोई रही।

"बहन, किस ओर?" रिक्शे वाले ने सानवी को उसके विचारों में से बाहर निकाला।

"बस, बस यहाँ साइड पर खड़ी रखो।" सानवी ने फटाफट रिक्शे वाले को पैसे दिए और रोशनी के घर की डॉर बेल बजाई।

"Hi Aunty! Where is the birth day girl?" सानवी का उत्साह शायद रोशनी से भी ज्यादा था।

आन्टी जवाब दें उससे पहले तो सानवी रोशनी के पास दौड़कर चली गई, "Happy birth day to you, my lovely!" सानवी रोशनी से लिपट गई।

"Thank you," रोशनी ने एकदम नीरसता से जवाब दिया।

"What happened? तू इतनी उदास क्यों है?" रोशनी का नीरसता वाला जवाब सुनकर सानवी उलझन में पड़ गई।

"अरे, कुछ नहीं यार, वह तो..," रोशनी की नज़र सौम्या पर पड़ी और वह वाक्य अधूरा छोड़कर दौड़ी।

"Hi Somya, I am very happy, कि तु आ गई। किसी ने मुझ से कहा कि तू आ नहीं पाएगी। और मैं अपसेट हो गई," सौम्या को देखकर रोशनी की आँखों में चमक आ गई।

"मेरी दोस्त की पार्टी हो, और मैं न आऊँ!," सौम्या स्टाइल में बोली।

सानवी ने दूर से रोशनी और सौम्या की मस्ती देखी तो उसके मन में चुभन हुई, "मुझे देखकर तो रोशनी खुश नहीं हुई।"

जैसे तैसे सानवी ने अपना मूड ठीक किया और रोशनी और सौम्या की मस्ती में शामिल होने के लिए गई। उन दोनों को हँसते देखकर सानवी ने सहजता से पूछा, "What is the jock?"

"फॉरगेट इट! तेरी समझ में नहीं आएगा।" रोशनी बोली और फिर हँस पड़ी।

सानवी के दिल को भयंकर ठेस लगी, "सौम्या आ गई इसलिए रोशनी मुझे अपनी बातों में शामिल भी नहीं करेगी?" नेगेटिव विचारों ने उसके मन को घेर लिया। पहली बार इतनी भीड़ में भी उसे अकेलापन लग रहा था। जिस पार्टी में आने के लिए वह इतनी आतुर थी, उसी पार्टी में से अब वह जल्दी निकल जाना चाहती थी।

घर पहुँचकर उसने पर्स टेबल पर फेंका और दौड़कर अपने कमरे में गई। थोड़ी देर बाद, रीटा बहन उसके पास आई।

क्या हुआ सानवी? तू ऑल राइट है न?

"मम्मी, रोशनी एक नंबर की मतलबी और घमंडी है!! मेरा काम था तब मेरे साथ फ्रेन्डशिप रखी और अब सौम्या मिल गई तो मुझे बिल्कुल भूल गई। She doesn't care for me. मैं उसकी बर्थ डे के लिए कितनी एक्साइटेड थी। लेकिन पार्टी में उसने मेरी ओर देखा भी नहीं।" बोलते-बोलते सानवी की आँख में आँसू बहने लगे।

"ओह सानवी!! रो मत बेटा।" रीटा बहन ने सानवी के आँसू पोंछे। "चल, मैं तुझे एक कॉमेडी सुनाऊँ आज पम्मी आन्टी का फोन आया था।"

पम्मी आन्टी अपने मज़ाकिया स्वभाव के लिए फेमस थीं। इसलिए उनका नाम सुनते ही सानवी की उदासी अचानक ग़ायब हो गई।

"पम्मी आन्टी को लगता था कि राजीव अंकल को ठीक से सुनाई नहीं देता। लेकिन उन्हें पक्का पता नहीं था। इसलिए उन्हें लगा वे राजीव अंकल का टेस्ट लें। पिछले शनिवार उनके घर राजीव अंकल के फ्रेन्डस् आने वाले थे। पम्मी आन्टी को लगा कि वह राजीव अंकल से एक प्रश्न पूछें। पहले करीब ४० फीट दूर खड़े रहकर, फिर ३० फीट, २० फीट... और फिर उन्हें पता चल जाएगा कि राजीव अंकल को ठीक से सुनाई देता है या नहीं।"

बोलते-बोलते रीटा बहन थोड़ा हँस पड़े। सानवी को तो उस बात का पता नहीं था इसलिए चेहरे पर कोई हावभाव के बिना वह बात सुन रही थी।

"What happened? तू इतनी उदास क्यों है?" रोशनी का नीरसता वाला जवाब सुनकर सानवी उलझन में पड़ गई।

४० फूट दूर रहकर पम्मी आन्टी ने पूछा, "राजीव, आपके फ्रेन्डस् कितने बजे आने वाले हैं?" कोई रिस्पोन्स नहीं था।

फिर तीस फूट की दूरी पर पम्मी आन्टी ने फिर वही प्रश्न पूछा। फिर कोई रिस्पोन्स नहीं।

२० फीट, १० फीट... लेकिन कोई रिस्पोन्स नहीं मिला। अंत में एकदम नज़दीक जाकर पम्मी आन्टी ने पूछा, "राजीव, आपके फ्रेन्डस् कितने बजे आने वाले हैं?"

राजीव अंकल ने अकुलाकर कहा, "ओह पम्मी, पाँचवी बार कह रहा हूँ। सात बजे आने वाले हैं। सात!!"

सानवी और रीटा बहन खिलखिलाकर हँस पडे।

"सानवी, दूसरों के दोष देखने में हम इतने एक्सपर्ट हैं कि वही दोष हमें अपने में नहीं दिखाई देते।" रीटा बहन ने पम्मी आन्टी की कॉमेडी बातों का सच्चा सार बताया।

और फिर गंभीरता से कहा, "बेटा, यह आईना हमें बाहर से अच्छा दिखने में हेल्प करता है। लेकिन यदि अंदर साफ होना हो तो जिसका दोष दिखे, उसे अपना आईना बना लेना चाहिए। उसका जो दोष दिखे, उसे अपने में चेक करना है और साफ करना है। रोशनी के जो दोष तुझे दिख रहे हैं, वैसे दोष क्या तुमने अपने जीवन में नहीं किए?"

ऐसा गहन प्रश्न सानवी के मन में डालकर, रीटा बहन अपने काम में वापस लग गई।

सानवी मम्मी का इशारा समझ गई। हीना का हँसता चेहरा उसकी आँखों के सामने आया और उसे ज़बरदस्त पश्चाताप हुआ। जिस दुःख का अनुभव उसे आज हुआ, ऐसा दुःख वह हीना को कितनी बार दे चुकी थी। अपने दोष पर दृष्टि पड़ते ही, रोशनी के प्रति नेगेटिविटी की आग बुझ गई। अंदर से जैसे एक आवाज़ आई, "जो दोष तू लेकर घूम रही है, वह दोष दूसरों में देखने का तुझे क्या अधिकार है?"

उसी क्षण सानवी ने फोन उठाया और हीना का नंबर डायल किया।

कला मंदिर

पल्लवी, हम स्व. देशपाँडे साहब की शिल्पकला पर विशेष अंक निकालने वाले हैं। सोलापुर में उनके कलामंदिर का विजिट करके, उनकी बेटी का इन्टरव्यू लेकर आर्टिकल तैयार कर लेना।
मैडम... मैं तो "हुसैन प्रोजेक्ट" पर काम कर रही हूँ।
मैंने हुसैन प्रोजेक्ट किसी और को दे दिया है।
व्होट? लेकिन उस प्रोजेक्ट पर मुझे काम करना है।
तुम जा सकती हो।
हुक्म ही करना आता है। मेरी मरज़ी तो पूछनी चाहिए न!
क्या हुआ पल्लू? चल, कॉफी ब्रेक लेते हैं।
पल्लवी की ऑफिस केबिन में,
आप से कितनी बार कहूँ धनजी भाई, कि मेरी कॉफी स्ट्रोंग होनी चाहिए। इसे वापस ले जाओ और फटाफट दूसरी स्ट्रोंग कॉफी ले आओ।

पल्लू, तू भी मैडम की तरह हुक्म ही करती है। धनजी भाई को दुःख नहीं होता होगा?
नेहल प्लीज। तेरी लेक्चर बाजी सुनने का कोई मूड नहीं है।
कुछ दिन बाद, स्व. देशपाँडे साहब के कला मंदिर में,
आइए पल्लवी बहन। आने में कोई तकलीफ तो नहीं हुई न?
नहीं, नहीं। ज़रा भी नहीं।
सुधा बहन पल्लवी को एक होल में ले गई। (जहाँ शिल्प थे)
वाह, पत्थर में से कितना ज्यादा सौंदर्य प्रकट हो सकता है। एक शिल्प बनाने में कितने दिन लग जाते हैं?
कभी आठ-दस दिन तो कभी दो-तीन महीना।
यदि आपको योग्य लगे तो एक प्रश्न का समाधान करोगी? देशपाँडे साहब पाँच साल तक ग़ायब़ हो गए थे। इन पाँच सालों के दौरान क्या हुआ था?
उस दौरान अनिरुद्ध बक्षी नामक उभरते युवा कलाकार की कला क्षेत्र में बहुत प्रशंसा हो रही थी।

कहीं किसी कोने में, पापा को अनिरुद्ध के प्रति ईर्षा उत्पन्न हो गई। वे खुद इस बात से अन्जान थे। जब मित्र अनिरुद्ध के काम की प्रशंसा करते, तब पापा उनकी गलतियाँ निकालते।
अनिरुद्ध की भूलें देखने की ऐसी धून सवार हो गई कि पापा का काम विकृत होने लगा। और एक दिन वे टूट गए। पाँच साल के बाद वे कला मंदिर वापस लौटे।
सुधा बहन पल्लवी को एक कोठरी में ले गई।
यह है पापा द्वारा एक ही पत्थर में से बनाया गया सब से विकृत शिल्प और पाँच साल बाद उनके ही हाथों से बनाया गया सब से उत्कृष्ट शिल्प।
यह क्या?
हैं तो दोनों काँच ही न? पापा ने उनके ही अक्षरों में इस सेटिंग का प्रयोजन बताया था।
जब दृष्टि बाहर रख के काँच में से दूसरों के दोष देखे, तब मूर्ति विकृत बनी। लेकिन जब दृष्टि अंतर्मुख की, आईने में अपने दोष देखे, तब मूर्ति सुंदर बनी।
दृष्टि बाहर रख के काँच में के दोष देखे, तब मूर्ति बनी। लेकिन जब दृष्टि अंतर्मुख की, आइने में अपने दोष देखे, तब मूर्ति सुंदर बनी।

माइकल ऐन्जलो की कही हुई एक बात पापा को बहुत पसंद थी। उन्होंने कहा कि हर एक पत्थर में शिल्प होता ही है। हम तो सिर्फ अनावश्यक बेकार हिस्से को निकाल देते हैं।
पाँच साल मंथन करने के बाद, खुद के दोष देखकर, बेकार हिस्से निकालकर, पापा ने खुद की ही मूर्ति को साकार बनाई।
अद्‌भुत, Thank you so much. मैं आपको इस विशेषांक की कोपी ज़रूर भेजूँगी।
और थोड़े प्रश्न पूछकर, फोटोग्राफ्स् लेकर पल्लवी ने सुधा बहन से जाने की आज्ञा ली।
पल्लवी, देश पाँडे साहब का आर्टिकल आज रात तक मुझे ई-मेल हो जाना चाहिए।
ओ.के. मैडम।
हुकम सिंह!
पल्लवी ने कॉफी का घूँट पीया। अकुलाकर धनसुख भाई से दूसरी कॉफी लाने के लिए कहने जा ही रही थी, तभी टेबल पर पड़े हुए आईने में अपना बिगड़ा हुआ चेहरा देखा।
यदि मैडम हुकम सिंह हैं, तो तु क्या है? और उसने शांति से घूँट पी लिया।

चलो खेले...

01

आपको दी गई चार डिज़ाइन में से कौन सी डिज़ाइन अलग है?

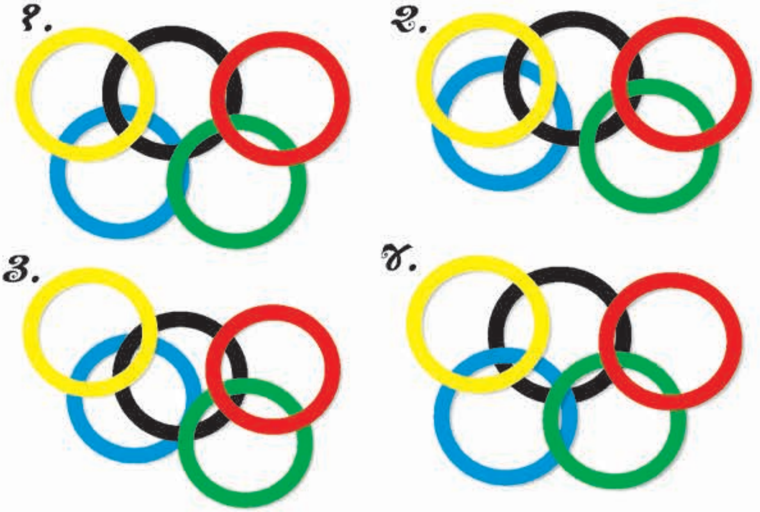

02

चित्र में प्रश्नचिन्ह् वाले में बॉक्स में कौन सा नंबर आएगा?

23	18	7	18
20	9	6	
8	11	5	?

ऐतिहासिक गौरवगाथा

प्रतिष्ठा पुर नामक एक नगर था। वहाँ के राजा का नाम मकरध्वज और रानी का नाम मदनसेना था। उनका एक ही कुमार था। उसका नाम मदन ब्रह्म था।

मदन ब्रह्म अर्थात् बहुत ही रूपवान! शौर्य, धैर्य और सौंदर्य की मूर्ति! जब वह युवा हुआ तब राजा मकरध्वज ने ३२ रानियों के साथ मदन ब्रह्म का विवाह करवा दिया। मदन ब्रह्म अपनी रानियों के साथ सुख से दिन गुज़ारने लगा।

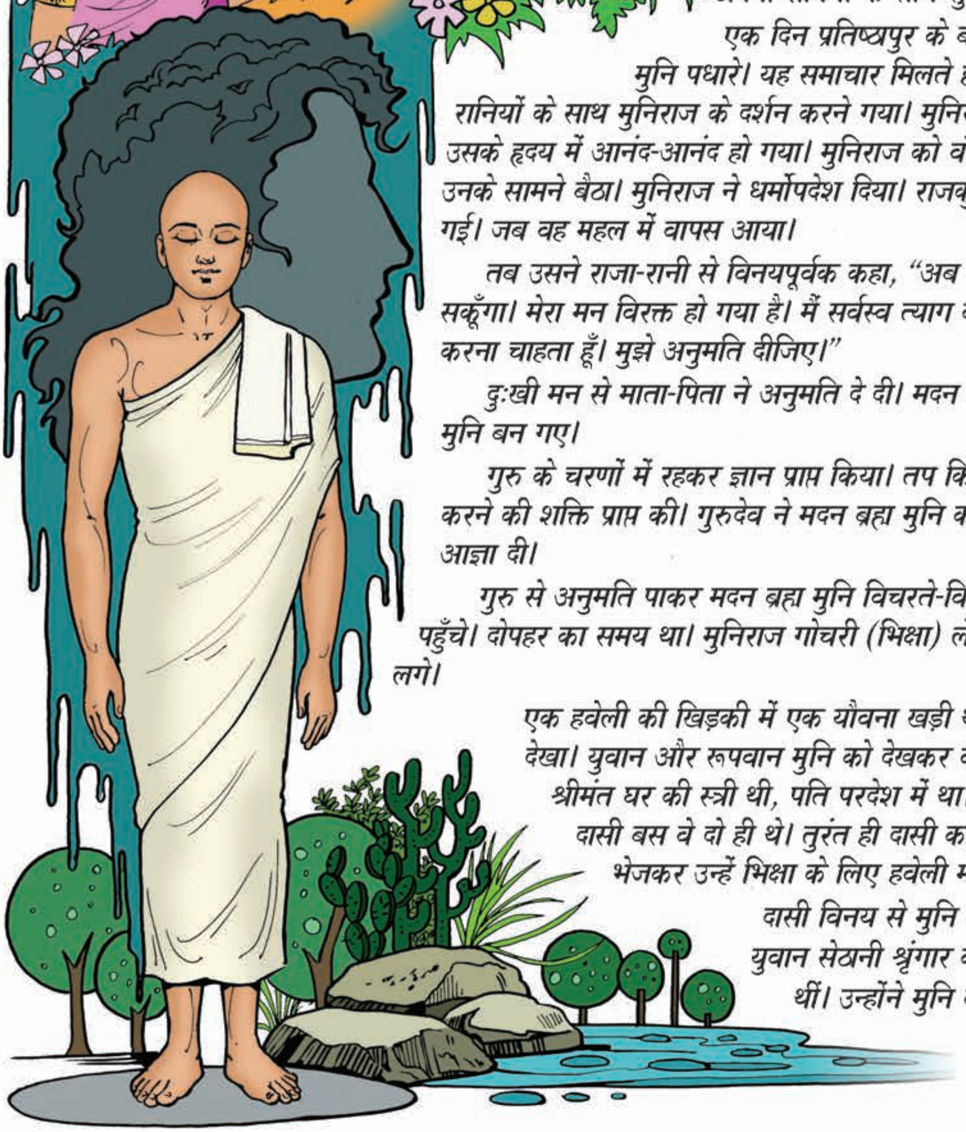

एक दिन प्रतिष्ठपुर के बाह्य उद्यान में एक महा मुनि पधारे। यह समाचार मिलते ही राजकुमार अपनी ३२ रानियों के साथ मुनिराज के दर्शन करने गया। मुनिराज के दर्शन करते ही उसके हृदय में आनंद-आनंद हो गया। मुनिराज को वंदन करके, विनय से उनके सामने बैठा। मुनिराज ने धर्मोपदेश दिया। राजकुमार की ज्ञानदृष्टि खुल गई। जब वह महल में वापस आया।

तब उसने राजा-रानी से विनयपूर्वक कहा, "अब मैं संसार में नहीं रह सकूँगा। मेरा मन विरक्त हो गया है। मैं सर्वस्व त्याग करके संयम धर्म स्वीकार करना चाहता हूँ। मुझे अनुमति दीजिए।"

दुःखी मन से माता-पिता ने अनुमति दे दी। मदन ब्रह्म कुमार मदन ब्रह्म मुनि बन गए।

गुरु के चरणों में रहकर ज्ञान प्राप्त किया। तप किया। उपसर्ग-परिषह सहन करने की शक्ति प्राप्त की। गुरुदेव ने मदन ब्रह्म मुनि को अकेले विचरने की आज्ञा दी।

गुरु से अनुमति पाकर मदन ब्रह्म मुनि विचरते-विचरते त्रंबावती नगरी में पहुँचे। दोपहर का समय था। मुनिराज गोचरी (भिक्षा) लेने के लिए नगर में घूमने लगे।

एक हवेली की खिड़की में एक यौवना खड़ी थी। उसने मुनिराज को देखा। युवान और रूपवान मुनि को देखकर वह उन पर मोहित हो गई। श्रीमंत घर की स्त्री थी, पति परदेश में था। घर में वह और उसकी दासी बस वे दो ही थे। तुरंत ही दासी को मुनिराज के पास भेजकर उन्हें भिक्षा के लिए हवेली में बुलवाया।

दासी विनय से मुनि को हवेली में ले आई। युवान सेठानी श्रृंगार करके दरवाज़े पर खड़ी थीं। उन्होंने मुनि के सामने मोदक रखकर

कहा, मुनिराज, यह मोदक ग्रहण कीजिए। फिर मैं आपको उत्तम वस्त्र देती हूँ उन्हें पहनकर मेरे शयन खंड में पधारिए। अपनी पत्नी के रूप में मुझे स्वीकार कीजिए।

मुनिराज द्वारा बात को अस्वीकार करने पर सेठानी उनसे लिपट गई। दासी ने तुरंत एक झाँझर मुनि के एक पैर में पहना दी जिससे मुनि बाहर न जा सकें। लेकिन मुनि सेठानी को धक्का मारकर झाँझर निकालने के लिए रुके बिना, हवेली से बाहर दौड़े।

सेठानी ने मुनि को बदनाम करने के लिए शोर मचाया। लोगों ने मुनि के पैर में झाँझर देखी और सेठानी की बात सुनकर मुनि की बहुत निंदा करने लगे।

लेकिन सामने ही राजमहल था। राजमहल के झरोखे में राजा बैठे हुए थे।

राजा ने सोचा, "मेरे नगर में निर्दोष मुनि को नहीं सताया जाना चाहिए।" राजा राज मार्ग पर आए। उन्होंने स्वयं सारे प्रसंग को जाना और समझा। और जब राजा ने लोगों को सही बात बताई। तब वे मुनि राज की प्रशंसा करने लगे।

राजा ने उस सेठानी को अपने राज्य से निकाल दिया। उसकी हाट-हवेली राजा ने ले ली।
मदन ब्रह्म मुनि अब झाँझरिया मुनि के नाम से पहचाने जाने लगे।

वे विहार करके कंचनपुर में पधारे। कंचनपुर के राज मार्ग पर ही राजमहल था। राजमहल के झरोखे में राजा-रानी बैठे-बैठे नगरचर्या देख रहे थे और वार्तालाप कर रहे थे। तभी दोनों की नज़र मुनि पर पड़ी।

रानी की आँखों से आँसू टपकने लगे। राजा को आश्चर्य हुआ, "इस साधु को देखकर रानी क्यों रोने लगीं? साधु युवान है, रूपवान है। क्या पूर्वावस्था में रानी का प्रेम तो नहीं होगा? साधुवेश में वह रानी से मिलने तो इस नगर में नहीं आए हैं? वह रानी से मिले, उससे पहले उसे परलोक में पहुँचा दूँ।"

राजा कुछ भी बोले बिना वहाँ से उठकर घोड़े पर बैठकर नगर के बाहर के उद्यान में गए। उद्यान के लोगों से एक गहरा गड्ढा खुदवाया। सैनिकों से कहा, "उस मुनि को मारते-मारते यहाँ ले आओ। यह साधु नहीं पाखंडी है।"

सैनिक मुनिवर को उद्यान में ले आए। राजा ने भयंकर क्रोध से मुनि से कहा, "अरे, पाखंडी, इस गड्ढ़े में खड़ा हो जा। अपने भगवान को याद कर ले। आज तेरा अंत है।" मुनि गड्ढे में खड़े हो गए।

मुनि ने सभी जीवों से क्षमा माँगी और आत्मा में लीन हो गए।

राजा ने तीव्र क्रोध में अंध होकर मुनिराज के गले पर तलवार का प्रहार कर दिया। उसी क्षण मुनि केवल ज्ञानी बनकर मोक्षगामी बन गए। मुनिराज का रजोहरण, कम्बल, वस्त्र सभी खून से लथ-पथ हो गए। इतने में आकाश में से चील झड़प से नीचे आई। माँस का लोथड़ा समझकर उसने रजोहरण को अपनी चोंच में ले लिया और आकाश में उड़ गई... लेकिन वज़न ज्यादा होने की वजह से चील की चोंच से रजोहरण नीचे गिर गया।

नीचे राजमहल था। छत पर रजोहरण गिर गया। रानी ने भाई-मुनि के रजोहरण को देखा। राजा ने मुनिराज की हत्या की है यह बात उसने सेवकों के द्वारा जानी, रानी बहुत रोने लगीं। अनशन (आजीवन उपवास) शुरू कर दिया।

राजा ने पूछा, "अन्शन क्यों किया?"

"आपने मेरे सगे भाई मदन ब्रह्म मुनि की हत्या कर दी...घोर अनर्थ कर दिया। धिक्कार है इस संसार को और संसार के सुखों को।"

रानी की बात सुनकर राजा काँप गए, बोले, "क्या मुनि आपके भाई थे? मदन ब्रह्म थे? अहो, मैंने बहुत ही अविचारी काम किया है। मैंने मुनि की हत्या करके नर्क में जाना तय कर लिया.... कितनी भयंकर भूल हो गई?" इस प्रकार बहुत प्रायश्चित करने लगे।

प्रायश्चित करते-करते राजा के कर्म भी नाश हो गए और केवलज्ञान प्रकट हुआ।

कुछ समय पहले का मुनि का हत्यारा केवलज्ञानी बन गया।

जीवंत उदाहरण

करीब ८०० साल पहले, शेख सादी नामक एक बड़े तत्त्व चिंतक हो गए हैं। वे जब छोटे थे तब उनके पिताजी उन्हें पहली बार मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए ले गए। पिता का आशय था कि पुत्र में बचपन से धर्म के संस्कारों का सिंचन हो।

नमाज के दौरान शेख सादी आसपास के लोगों का अवलोकन करने लगे। उनका ध्यान नमाज में कम और लोगों में ज्यादा था। बाहर आकर

१. शेख सादी

उन्होंने पिताजी से कहा, "अब्बाजान, ये लोग कैसे हैं! कौने में बैठे कुछ लोग तो नमाज के समय सो ही गए थे।"

यह सुनकर पिताजी ने कहा, "बेटा तू भी उन लोगों कि तरह सो गया होता तो बहुत अच्छा होता। कम से कम तूने उनके दोष तो नहीं देखे होते।"

पिताजी के कहे हुए शब्द शेख सादी के बाल हृदय पर छप गए और तब से उनका औरों के दोषों की ओर दृष्टि करना बंद हो गया।

२. इक पहले पत्थर का

एक बार लोगों की एक टोली, ईशु के पास एक स्त्री को धक्का मारते हुए, घसीटते लेकर आई। बेचारी स्त्री अपने खुले बालों का दोनों हाथों में समेटकर उनमें अपना मूँह छूपाकर ईशु के सामने खड़ी हो गई। टोली में पुजारी लोग भी थे।

उन्होंने ईशु से कहा, "यह औरत व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है। मूसा की धारा के अनुसार उसे पत्थर मारकर मार डालने की सज़ा होनी चाहिए। इस मामले में आपको कुछ कहना है"?

ईशु ने तो जैसे कुछ सुना ही नहीं है इस तरह ज़मीन की ओर मूँह करके बैठे थे।

लेकिन लोगों को तो उनसे जवाब चाहिए था। जब बहुत आग्रह किया गया तब ज़रा सा सिर ऊँचा करके ईशु बोले, "इस औरत ने पाप किया है, बात सही है। आप उसे पत्थर फैंककर मार डालने की बात कर रहे हैं वह भी सुना। अब मुझे इतना ही कहना है कि आप में से जिसने कभी, मन से भी पाप नहीं किया है वह पहला पत्थर मारे। चलो, करो शुरू।"

कहकर ईशु वापस मूँह नीचे करके धरती पर कुछ बनाने लगे। कुछ देर बाद ईशु ने सिर ऊँचा किया तो टोली ग़ायब़ और वह स्त्री अभी भी उसी तरह उसी जगह सिर नीचा करके खड़ी थी। ईशु उस स्त्री को संबोधित करके कहा, "बहन, क्यों, कहाँ गए लोग? किसी ने तुझे पत्थर नहीं मारे?"

स्त्री ने जवाब दिया, "नहीं प्रभु, किसी ने नहीं।"

ईशु ने बहुत ही करूणा से कहा, "तो तुम अब अपने घर वापस लौट जाओ। मैं भी तुझे सज़ा नहीं दूँगा और जा, अब फिर से पाप मत करना।"

इस तरह ईशु ख्रिस्त ने लोगों को दूसरों के दोष देखने से पहले खुद के दोष देखने की समझ दी।

मीठी यादें

एक बार जन्म जयंती के समय दर्शन का प्रोग्राम था। करीब १२०० लोग इकट्ठे हुए होंगे। उस समय दर्शन इस तरह होते थे कि सभी फूल के हार लेकर आते थे, नीरू माँ को हार पहनाते, फिर उनके पैरों में विधि करते, नीरू माँ की विधि पूरी होने के बाद नीरू माँ उन्हें हार पहनाते फिर महात्मा जाते। इस तरह एक महात्मा पर चार से पाँच मिनिट हो जाते।

एक सेवार्थी महात्मा इस दर्शन का मैनेजमेन्ट कर रहे थे।

अचानक लाइन में धक्कामुक्की हो गई। धक्कामुक्की करने वाले करीब ६० या ७० लोग थे। और सभी को ऐसा था कि मुझे पहले जाना है। धक्कामुक्की में लाइन में खड़े बुजुर्ग महात्मा गिर जाएँ ऐसा था।

उन सेवार्थी महात्मा ने सभी से शांति से लाइन में आने के लिए विनती की, लेकिन किसी ने नहीं सुना और धक्कामुक्की चालु रही। अंत में उन्होंने माइक पर निवेदन किया कि, प्लीज सभी लाइन में नंबर से ही आएँ। सभी को दर्शन ज़रूर मिलेंगे। यदि धक्कामुक्की करोगे तो हम दर्शन बंद करवा देंगे।

कुछ ही देर में सब अपने आप ही सेट हो गया। दर्शन पूरे होने के बाद उस शाम को नीरू माँ ने उन महात्मा को बुलवाया और कड़काई से कहा, "आपको पता है कि आपने यह क्या किया?"

उन भाई ने सिर हिलाकर मना किया।

नीरू माँ ने कहा, "दादा का नियम है कि सत्संग के लिए या सत्संग की कोई प्रवृत्ति के लिए कभी नेगेटिव नहीं होना चाहिए। आप कह ही कैसे सकते हो कि दर्शन बंद करवा देंगे। आज तक हम कभी नहीं बोले कि यह दर्शन बंद कर देंगे या यह सत्संग बंद कर देंगे तो आप किस तरह बोल सकते हो? यह कौन सा अहंकार है?"

वे भाई बिल्कुल नरम पड़ गए। फिर नीरू माँ ने एक बात बताई कि एक बार कच्छ में ज्ञानविधि का आयोजन था तब दादा की तबियत ज़रा भी अच्छी नहीं थी। उनसे ज्ञानविधि हो सके ऐसा नहीं था। लेकिन दादा ने कहा कि, मैंने एक बार प्रोमिस दिया है कि ज्ञानविधि होकर ही रहेगी, इसलिए करेंगे ही। यह दादा का सिद्धांत ही है।

फिर नीरू माँ ने कहा, आज के बाद फिर कभी सत्संग के लिए या दर्शन के लिए यह चीज़ नहीं आनी चाहिए। चाहे कुछ भी हो, कैसे भी संयोग हो, कोई भी परिस्थिति हो, सत्संग डिक्लेयर हुआ तो सत्संग होगा ही। दर्शन तय हुए तो दर्शन होंगे ही।

इस तरह नीरू माँ ने उन भाई का मानो अल्टिमेटम दे रहे हों ऐसे कहा कि, "फिर से ऐसा कभी नहीं होना चाहिए।"

उसके बाद वे महात्मा हमेशा उस बात का ध्यान रखने लगे।

Summer Camp 2019

४ से ७ वर्ष के बच्चों
के साथ हुए समर कैम्प की एक झलक...

अहमदाबाद

पज़ल के जवाब :

१. उत्तर : ४ डिज़ाइन
क्योंकि बाकी सब में ब्लू रींग सब से पीछे हैं।

२. उत्तर : ३
क्योंकि सभी एक कलर वाले बॉक्स के नंबरों का जोड़ ३२ होता है।

Akram Express

April 2019
Year : 7, Issue : 1
Conti. Issue No.: 73

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

सूरत

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** *या* **Kids Website** *की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।*

https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस के ऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने के दौरान जो रकम दी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025